एहसास
बिकास चन्द्र राव

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website:*www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-30-2

Price: ₹ 180.00

The opinions/ contents of the book is political satire and individual opinions/ thoughts of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

एहसास

सफर एक आम आदमी का

चित्रांकन–बिकास चन्द्र राव

लेखक के बारे में

पश्चिम बंगाल में बर्धमान जिले के अंडाल में बिकास चन्द्र राव का जन्म २२ दिसंबर ,१९७९ में हुआ। मूलतः लेखक वर्तमान में झारखण्ड के देवघर जिले के सारठ प्रखंड के बंडाबरा नामक गाँव का निवासी है । पिता श्री भुखलाल राव और माता श्रीमती सुणामणि देवी के घर जन्में बिकास राव बचपन से ही छोटी छोटी जरूरतों से लड़ते रहे । पिता श्री भुखलाल राव के प्रभाव से उन्हें लेखन में रूची जागी और उन्होंने अपनी पहली कविता ''रानी लक्ष्मीबाई'' चतुर्थ कक्षा में लिखी ।

''मर्दानी, वीरांगना,न जाने कितनी उपाधियाँ
आपको वीरता के लिए मिली,
सपने देखे जो रातों को जग कर आपने
अब जा कर वो आजादी मिली ''

इनकी स्कूली शिक्षा केंद्रीय विद्यालय ,अंडाल में हुई। स्कूल के दिनों में इन्होंने अपनी कविता को खूब निखारा और ख्याति प्राप्त की। लगातार कई वर्षों तक ''बाल कवि'' की उपाधि धारण कर अपनी कविता को तराशते रहे । स्कूली दिनों में इनकी मुलाकात ''तितली''

से हुई और इन्होंने तितली को प्रेरणा स्वरुप अपनी कविता में समाहित किया और लिखते रहे ।

स्कूल छोड़ने के बाद कविता लिखने से जैसे उन्होंने सन्यास ले लिया और अपना जीवन सँवारने की जद्दोजेहद में फंसे रहे । उन्होंने MBA, MA(RD),CAIIB, PGDBF जैसी डिग्रियाँ हासिल की तथा वर्तमान में बैंक ऑफ बड़ोदा में शाखा प्रबंधक के रूप में कार्यस्थ हैं।

कविता में नैसर्गिक रूची के चलते इन्होंने जीवन की हर कठिनाइओं के बावजूद भी लेखनी नहीं छोड़ी और अब कविता उनके रग–रग में बस गयी है ।

इनकी पहली कविता संग्रह ''एहसास'' में आपको ऐसे ही कई लम्हों और भावनाओं का एहसास होगा जिन्हें हम सब अपने जीवन में महसूस करते हैं ।

मेरी असीम शुभकामनाएँ

अनंत कुमार

लेखक से संपर्क करें

e-mail : rao_bikash1979@rediffmail.com,
raobikash1979@yahoo.com

mobile : 9556110896

पुस्तक के बारे में

हमारे जीवन में मृगतृष्णा की अपार संभावनाएं होती है जिसे हासिल करने के लिए हम अपने अहसासों को कुचल कर एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा की दौड़ में शामिल हो जाते हैं। उन दबे कुचले अहसासों को श्रृंखलाबद्ध कर इस पुस्तक में पिरोया गया है। इसमें उन पहलुओं को स्पर्श करने का प्रयास किया गया है जिसे हम जीवन की दौड़ मैँ या तो छोड़ देते हैं या उसे अपनी डायरी तथा पुराने संदूक मैँ सहेज कर रखते है।

मुझे आशा है कि आप इस काव्य संकलन के माध्यम से अपने बेजान पड़ी अहसासों को जीवंत रूप में महसूस कर पाएँगे।

– बिकास राव

प्राक्कथन

वैसे तो कविताएँ लिखने का शौक मुझे बचपन से है।मैंने अपनी पहली कविता चतुर्थ कक्षा में लिखी थी जिसकी प्रेरणा मुझे अपने पिताजी श्री भुखलाल राव जी से मिली। वो बचपन में मुझे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की वीरता युक्त कविताओं का पाठ करके सुनाते थे।वहीँ से कविताएँ लिखने की रूचि मुझमे जागी।मैंने अपनी पहली कविता रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का गुणगाण करते लिखा था।

मैंने जीवन के हर पहलू को एक साधारण व्यक्ति की तरह महसूस किया है और साधारण और सरल शब्दों में अपने अनुभवों को इस किताब में संकलित करने का प्रयास किया है।

इस पुस्तक में मैंने सामाजिक तानाबाना ,आह खुशी ,दुःख ,प्रेम इत्यादि का एहसास कराने का प्रयास किया है।

मुझे आशा है कि मेरी पहली कविता संकलन आप सबों के ह्रदय में अपनी जगह बना पाएगी।आपकी बेबाक प्रतिक्रिया का मुझे इंतजार है।

"अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं,
मुर्दा है वह समाज जहाँ साहित्य नहीं"

आभार

आप सभी को मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ। आप सब इस संकलन की रचना के प्रेरणा स्वरुप में भागीदार हैं।

आपका धन्यवाद ...

तितली (मेरी प्रेरणा)
पूज्यवर पिताजी श्री भुखलाल राव
पूजनीय माताजी श्रीमती सुनामणि देवी
पीयूष
आयुष
चंचला देवी (मेरी पत्नी)

विषय-सूची

सभ्यसमाज	02
गरीब	05
संघर्ष	07
वैश्विकरण	10
मेरा नंबर कब आएगा ?	12
फिर तुम क्यों आए	14
समर्पण	17
प्रेम का अंतिम किस्त	19
बेवफ़ा समझा था	21
अब दरवाजा बंद कर लो	24
क्या मैं मर रहा हूँ ?	27
दिल हमारा लगा रहा	30
अकेला मानव	33
अंतर्द्वंद	35
संजोए यादें	37
अनोखा व्याह	39
समझदार प्राणी	42
कैसे जी रहे हैं ?	44
कब आएगी तुम्हारी सवारी	46
एक आयल पेंटिंग	49

दीवाली के बाद 52
बदलता रुख़ 54
चलो अच्छा हुआ 56
उसे होगा दिल से जाना 58
सरकारी अधिकारी 60

सभ्यसमाज

एक आम आदमी, उसका आम सफर,
समझना, समझाना, समझौता जीवन भर,

रेत से सपने, हाथ न आए
जतन करो जितने, उस पर चलती
किस्मत की कटारी, आज मैं हारा
कल तुम्हारी बारी,

मध्यम वर्ग का दर्जा,
रोटी, कपड़ा, मकान के लिए कर्जा,

बेबसी में चरित्र को दीवार पर टांगा,
सुबह अमानुष सा रूप धरा,
शाम को भगवान से माफी माँगा,

समझौतों का गुबार कहीं तो फूटेगा,
चार सालों में क्यों नहीं सड़कें टूटेंगी,
बेशक देश लहूलुहान होगा,
यूँ ही बदस्तूर आम आदमी का
जीवन चला जा रहा,
आम आदमी, आम आदमी को छला जा रहा,

क्या चरित्र रुपयों और बेबसी की मुहताज है?
क्या यही हमारा सभ्य समाज है ?

एहसास

यूँ तो पल - पल हम अपनी छोटी - छोटी आकाँक्षाओं का गला घोंट कर जीवन की प्रतिस्पर्धा में जम कर जी जान से जुटे रहते हैं और इस दौड़ के पीछे न जाने कितनी यादों को चप्पल के नीचे घुट - घुट कर मरने की आदत सी हो जाती है.

मैंने वक़्त के खूँटे पर,
यादों की कमीज़ टाँग रखी है,
फ़ुरसत के पलों में कभी - कभार
पहन लिया करता हूँ,

खून से सने अख़बार
दरख्तों में सजा कर रखे हैं,
अतीत को बांधकर उसमें धीरे - धीरे
दरिया में बहाया करता हूँ,

जिंदगी काफी आगे निकल चुकी है,
बेंच पर अकेला मैं अपने अक्स से
सवाल - जवाब किया करता हूँ,

- बिकास

लेखक से संपर्क हेतुः
rao_bikash1979@rediffmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-81-19927-30-2
9 788119 927302